कविता

16

हे शिक्षक गर दे दोगे तुम

ममता श्री सिंह*

हे शिक्षक गर दे दोगे तुम,
आकार मुझे,
मैं स्वप्न साकार कर जाऊँगा।
तेरी इनायतों से, हर तूफानों से लड़कर,
किनारों तक पहुँच जाऊँगा ।1।
मासूमियत से भरा चेहरा मेरा, मेरे प्रश्न भी,
बड़े बचकाने से,
समझाओगे अगर अपने,
ज्ञान पटल से, मैं साक्षर बन जाऊँगा।
तेरी इनायतों से, हर तूफानों से लड़कर
किनारों तक पहुँच जाऊँगा ।2।
जो भर दोगे मेरे परवाजो को, हौसलो से,
सच कहता हूँ एक दिन भारत की
आवाज बन जाऊँगा।
तेरी इनायतों से, हर तूफानों से,लड़कर किनारों
तक पहुँच जाऊँगा ।3।

**मुख्याध्यापिका*, पी.एम. श्री. केंद्रीय विद्यालय, सेक्टर 4, रामकृष्ण पुरम दिल्ली 110 022

मैं बेहद मासूम हूँ, मुझको गर्म झोंकों से बचाना,
सींचोगे गर, मुझे अपनेपन से,
मैं निस्वार्थ पेड़ बन जाऊँगा।
तेरी इनायतों से, हर तूफानों से लड़कर
किनारों तक मैं पहुँच जाऊँगा ।4।
मेरे भीतर सहनशीलता, भाईचारे,
देश प्रेम का बीज बो देना।
सच कहता हूँ एक दिन मैं अमन
का दूत बन जाऊँगा।
तेरी इनायतों से, हर तूफानों से लड़कर
किनारों तक पहुँच जाऊँगा ।5।
सींचना मुझे जतन से, इस नन्हें से, कली को,
सच कहता हूँ फूल बनकर, इस फिजा में,
खुशबू बन महक जाऊँगा।
तेरी इनायतों से, हर तूफानों से लड़कर
मैं किनारों तक पहुँच जाऊँगा ।6।